IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 1, June 2023

गोंड जनजाति के सामाजिक एवं संस्कृतिक जीवन का एक अध्ययन

डॉ. मधुलिका श्रीवास्तव
प्राध्यापक समाजशास्त्र
शास. ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)
नितेष मेश्राम
शोधार्थी, समाजशास्त्र
शास. ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

शोध सारांश **-** भारत की गोंड जनजाति सबसे बड़े आदिवासी समुदायों में से एक मानी जाती है। गोंड जनजाति के लोगों की आजीविका का प्रमुख स्रोत कृषि या दैनिक मजदूरी है। यह जनजाति गोंडवाना नामक विस्तृत वन क्षेत्र में रहती थी। गोंड लोग झूम खेती करते थे। गोंड जनजाति, जिसकी आबादी अधिक है, लोगों के कई अन्य छोटे समूहों में विभाजित थी जो एक–दूसरे (कुलों) से संबंधित थे। उन्होंने अपने घर किसी पहाड़ी या नदी के पास बनाए, जिन्हें बाद में घने जंगलों से मजबूत किया गया। गोंड ब्रिटिश शासकों के खिलाफ लड़ाई में अपनी बहादुरी के लिए लोकप्रिय हैं। मुगलों के पतन के बाद 1990 में मराठों के बाद गोंडों ने भी मालवा पर नियंत्रण हासिल कर लिया। भारत ऐसी जनजातियों का देश है और प्रत्येक जनजाति की कुछ सांस्कृतिक और सामाजिक विशिष्टता होती है।

मुख्य शब्द **-** ***गोंड, जनजाति, सामाजिक, संस्कृतिक, जीवन , आजीविका आदि।***

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची **-**

1. बनर्जी, बीजी, और किरण भाटिया। गोंडों की जनजातीय जनसांख्यिकी । दिल्ली, जियान पब हाउस, 1988.
2. एल्विन, वेरियर. जंगल की पत्तियाँरू एक गोंड गाँव में जीवन । ऑक्सफ़ोर्डरू ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1991।
3. फुच्स, स्टीफ़न. पूर्वी मंडला के गोंड और भूमिया । बॉम्बेरू एशिया पब्लिशिंग हाउस, 1960।
4. फ्यूरर–हैमेंडोर्फ, क्रिस्टोफ वॉन, और एलिजाबेथ वॉन फ्यूरर–हैमेंडॉर्फ। आंध्र प्रदेश के गोंडरू भारतीय जनजाति में परंपरा और परिवर्तन। नई दिल्ली रू विकास पब्लिशिंग हाउस, 1979.
5. ग्रिग्सन, विल्फ्रेड। बस्तर के मारिया गोंड । लंदनरू ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1949।
6. शर्मा, अनिमा. संक्रमण में जनजातिरू ठाकुर गोंडों का एक अध्ययन । भारतरू मित्तल प्रकाशन, 2005।
7. सिंह, केएस, एड. ष्गोंड।ष् भारत के लोगों में . खंड 3रू अनुसूचित जनजातियाँ । दिल्ली और ऑक्सफ़ोर्डरू ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस विद द एंथ्रोपोलॉजिकल सर्वे ऑफ़ इंडिया, 1994।